# 012 सूरह यूसुफ.

खुलासा मज़ामीने कुरान उर्दू.| मौलाना मलिक अब्दुर्रउफ साहब.

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

इस मुबारक सूरत मे हज़रत यूसुफ (अल) का इबरत दिलाने वाला किस्सा, उन्की ज़िन्दगी और उन्की तालीमात का तज़किरा हे. इन वाकयात की रोशनी मे आपﷺ को ये बतलाया गया हे के बहुत जल्द ही मक्का के काफिर लोग भी बिलकुल इसी तरह आपकी खिदमत मे इसी तरह पेश होंगे जैसे हज़रत यूसुफ (अल) की खिदमत मे उन्के भाई लाचार और मजबूर होकर पेश हुये थे.

## हज़रत यूसुफ (अल) का ख्वाब.

इस रोशन किताब (कुरान) को हमने अरबी ज़ुबान मे उतारा हे, ताकी तुम इस्को अच्छी तरह समज़ सको. हम आपको एक बेहतरीन किस्सा सुनाते हे जिसे आप नही जानते हे.

हज़रत यूसुफ (अल) ने अपने वालिद से कहा अब्बाजान! मेने ख्वाब मे ग्यारा सितारे, सूरज और चांद देखे हे जो की मुज़े सज्दा कर रहे हे. वालिद ने कहा बेटे! अपना ख्वाब भाइयों को मत बताना, वरना वो तुम्हारे हक मे कोई धोखे की चाल चलेंगे, और तेरा रब तुज़े चुन लेगा, और तुज़े ख्वाबों की ताबीर का इल्म देगा, और तुज़ पर अपनी नेमत (नुबुव्वत) मुकम्मल करेंगा, और याकूब

(अल) की औलाद पर, जिस तरह की नेमत हज़रत इब्राहीम (अल) और हज़रत इसहाक (अल) पर मुकम्मल फरमायेंगा. (यानी जो नबूव्वत का सिलसिला हज़रत इब्राहिम (अल) से चला था वो आगे भी बाकी रहेगा)

## हज़रत यूसुफ (अल) कुवें मे.

हज़रत यूसुफ (अल) और उन्के भाइयों के हालात मे बडी निशानियां हे. वाक्यात कुछ इस तरह हे के उन्के सौतेले भाइयों ने आपस मे मशवेरा किया की युसूफ और उन्के भाई (बिन्यामीन) वालिद साहब को हमसे जियादा मेहबूब हे, इस्लीये बेहतर तदबीर (प्लान) ये हे की उन्को कत्ल कर दे या उन्को किसी गहरे कुवें मे डालदे ताकी की कोई आता जाता काफिला उसे निकाल ले, वो अपनी साज़िश का प्लान बना कर वालिद (हज़रत याकूब (अल) के पास गये और केहने लगे अब्बाजान! आप यूसुफ के मामले मे हमपर भरोसा नही करते, हालांकि हमतो उस्के खैर ख्वाह हे. उसे हमारे साथ खेलने के लिये भेज़े, हम उस्की हिफाज़त करेंगे. हज़रत याकूब (अल) ने कहा मुज़े खतरा हे, तुम उसे ले जावो और उसे कोई भेडिया खाजाये, और तुम्हें उस्की खबर भी नाहो. उन्होने कहा हमारे होते हुवे भेडिया उसे खाजाये, तब तो हम बडे निकम्मे समज़े जायेंगे.

चुनांचे इस तरह हज़रत यूसुफ (अल) को बाप के पास से ले गये, और उन्होने हज़रत यूसुफ (अल) को कुवें मे गिरा दिया, हमने हज़रत युसूफ (अल) से वही के ज़रिये केह दिया, एक वक्त आयेंगा जब तू उन्को उन्की ये हरकत जतायेगा, उस्के बाद वो सब रातको रोते हुवे अपने बाप के पास आये और केहने लगे अब्बाजान! हम लोग खेलकूद मे मसरूफ थे, और यूसुफ हमारे सामान की हिफाज़त के लिये बैठा हुवा था की उसे भेडिये ने खालिया, और हज़रत यूसुफ (अल) के कुर्ते पर ज़ूठ मूठ का खून भी लगाकर ले आये थे, हज़रत याकूब ने कहा की तुम सबने एक बात धडली हे (बहाना बना लिया हे) ठीक हे लेकिन मे सबर करूंगा, अल्लाह मेरा मददगार हे.

उधर एक काफिला आया और काफिले वालों ने अपने साथी को पानी लेने के लिये कुवें पर भेज़ा, उसने कुवें मे डोल डाला तो हज़रत यूसुफ (अल) को देखकर पुकार उठा, मुबारक हो! यहा तो एक लडका हे. और उन्होने यूसुफ (अल) को तिजारत का माल समज़कर छुपा लिया और फिर उन्होने (भाईयों ने) हज़रत यूसुफ (अल) को बहुत ही मामूली सी कीमत पर बेच दिया. (उन्के भाई उन्की निगरानी करते रहे, इस्लीये उन्होने काफिले वालों से कहा की हमारा गुलाम भाग गया हे और फिर हज़रत यूसुफ (अल) का

ओने पौने दामों मे सौदा कर लिया. फिर काफिले वालों ने मिसर जाकर उन्की बोली लगाई, और उन्को बडी भारी कीमत पर अज़ीज़े मिसर को बेच दिया).

## हज़रत यूसुफ (अल) और अज़ीज़े मिसर की बीवी.

मिसर के जिस शख्स ने हज़रत यूसुफ (अल) को खरीदा था उसने अपनी बीवी से कहा इसे अच्छी तरह रखना, हो सकता हे की ये हमारे लिये फायदेमन्द साबित हो, या इसे हम अपना बेटा बनाले, इस तरह हमने हज़रत यूसुफ (अल) के लिये मिसर की सर ज़मीन मे कदम जमाने की सूरत पैदा कर दी, और अल्लाह तआला अपना काम करते रेहते हे, (गुलामी से निकालकर बादशाहत तक पहुंचाना) लेकिन अक्सर लोग नही जानते. और फिर जब हज़रत यूसुफ (अल) अपनी भरपूर जवानी की हद को पहुंच गये तो अल्लाह तआला ने उन्को नुबूव्वत अता फरमाई.

वो (यूसुफ अल) जिस औरत के घर मे रहते थे उन्पर डोरे डालने लगी, और एक दिन दरवाज़े बन्द करके केहने लगी आजा! हज़रत यूसुफ (अल) ने कहा की अल्लाह की पनाह! मे ये काम करूं! ऐसे ज़ालिम कभी कामयाब नही होते. वो हज़रत यूसुफ (अल) की तरफ बढी और यूसुफ (अल) भी उस्की तरफ बढ जाते, अगर अल्लाह की निशानी ना देख लेते. (शैतान ने उन्के दिल मे ऐसे

वसवसा डाला, जेसे रोज़े की हालत मे पानी का ख्याल आना, लेकिन गुनाह का वसवसा आने पर अगर उस गुनाह से बचें, तो उस्पर भी सवाब मिलता हे, इस तरह अल्लाह तआला ने उन्की हिफाज़त फरमाली)

आखिरकार हज़रत यूसुफ (अल) और वो आगे पीछे दरवाज़े की तरफ दोडे, और उसने पीछे से यूसुफ (अल) का कुर्ता खींचकर फाड दिया, जब दरवाज़े पर पहुंचे तो वहा उसका शौहर अज़ीज़े मिसर मौजूद था. वो उसे देखते ही केहने लगी उस शख्स की क्या सज़ा होगी जो तेरी धरवाली पर अपनी निय्यत खराब करे, ऐसा शख्स कैद का या तो सख्त सज़ा का मुस्तहिक हे. हज़रत यूसुफ (अल) ने कहा इसने मुज़े फांसने की कोशिश की हे, और इस बात की औरत के घर वालों मेसे एक (चंद दिनों के छोटे से बच्चे) ने गवाही दी, और उसने कहा देख लो! अगर यूसुफ (अल) का कुर्ता आगे से फटा हे, तो औरत सच्ची हे और ये ज़ूठा हे. और अगर इस्का कुर्ता पीछे से फटा हे तो ये सच्चा हे और औरत ज़ूठी हे. जब उस्के शोहर ने हज़रत यूसुफ (अल) का कुर्ता पीछे से फटा हुवा देखा तो केहने लगा ये सब औरतों की चालाकियां हे, वाकई तुम्हारी चालें बडी गज़ब की होती हे. युसूफ! आप इस मामले को जाने दीजिये, और ए औरत! तू अपने कसूर की माफी मांग, बेशक तू ही गलती पर हे.

# मिसर की बेगमों की गपशप.

जब इस मामले की खबर बाहर फेल गई तो शहर की औरतें आपस मे चर्चा करने लगी के अज़ीज़े मिसर की बीवी अपने नौजवान गुलाम के पीछे पडी हुई हे, और उस्की मोहब्बत ने इस्को बेकाबू कर रखा हे, उसने जब उन औरतों की ये बातें सुनी तो उन्को दावत दी, और उन औरतों की मेहमान-नवाज़ी के लिये मजलिस सजाई, और हर एक के लिये एक एक छुरी रखी, और बिल्कुल उस वक्त जब वो फल काट रही थी हज़रत यूसुफ (अल) को इशारा किया की उन्के सामने निकल आये, जब औरतों की उन्पर नजर पडी तो देखती ही रह गई, और अपने हाथ काट बैठी, और बे-इख्तियार पुकार उठी, ये शख्स कोई इन्सान नही, बल्कि ये तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता हे.

अज़ीज़े मिसर की बीवी ने कहा देख लिया! ये हे वो, जिस्के मामले मे तुम मुज़ पर बातें बनाती थी, हां! मेने इस्को फांसने की कोशिश की थी, मगर ये बच निकला, इसने अब भी अगर मेरा कहना ना माना तो ये कैद कर दिया जायेंगा, या बहुत सख्त सज़ा दि जायेंगी. हज़रत युसूफ ने कहा ए मेरे रब! ये औरतें मुज़े जिस काम की दावत दे रही हे, इस्के मुकाबले मे मुज़े जेल जाना मंजूर हे, अगर तूने मेरी मदद नही की तो मे इन्के जाल मे फंस जाउंगा. हज़रत यूसुफ

(अल) की दुवा कबूल हो गई और वो उन्के धोके से बच निकले और एक लम्बी मुद्दत तकके लिये कैद कर दिये गये. (हज़रत यूसुफ (अल) ने खुद अपने लिये कैद को पसन्द किया था, अगर वो आफियत की दुवा मांगते तो उन्को आफियत अता की जाती)

## कैदियों को हज़रत यूसुफ (अल) की तबलीग.

दो गुलाम और भी हज़रत यूसुफ (अल) के साथ कैद खाने मे दाखिल हुवे, एक दिन उन दोनों मेसे एक ने हज़रत यूसुफ (अल) से कहा मेने ख्वाब देखा हे की मे शराब बना रहा हु, दूसरे ने कहा की मेने ये देखा की मेरे सर पर रोटीयां रखी हुई हे और परिन्दे उसमे से नोच नोच कर खा रहे हे, आपने फरमाया मे तुम्हें बहुत जल्द ही इन ख्वाबों की ताबीर बतलाउंगा. ये इल्म उन उलूम मेसे हे जो मुझे मेरे रब ने सिखलाये हे, मेने उन लोगों का तरीका छोडकर जो अल्लाह पर और आखिरत पर यकीन नही रखते, अपने बाप दादा हज़रत इब्राहिम (अल) हज़रत इसहाक (अल) और हज़रत याकूब (अल) का तरीका अख्तियार कर लिया हे. हमारा ये काम नही हे की अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठेरायें.

ए जैल के साथियों! तुम खुद ही सोचो! बहुत से अलग-अलग रब बेहतर हे या वोह एक अल्लाह जो सब पर गालिब हे. उस्को छोड कर जिस्की तुम इबादत करते हो, उन सब की हकीकत इस्के

सिवा कुछ नही के तुम्हारे बाप दादा उन्की पूजा करते थे जब के हुक्म चलाने का इख्तियार अल्लाह के सिवा किसी का नही हे.

ए जैल के साथियों! तुम्हारे ख्वाब की ताबीर ये हे की तुम मेसे एक बादशाह को शराब पिलायेंगा, और दूसरे को सूली पर चढाया जायेंगा, और परिन्दे उसका सर नोच नोच कर खायेंगे, फिर जिस्के मुताल्लिक ये ख्याल था की वो जेल से छूट जायेंगा, हज़रत यूसुफ (अल) ने उस्से कहा मिसर के बादशाह से मेरा जिकर करना, (एक बेगुनाह कैदी आप की जेल मे पडा हे) मगर जैल से छूटने के बाद उसे शैतान ने ऐसा गफलत मे डाला की वो बादशाह के सामने उन्का जिकर करना भूल गया.

## अज़ीज़े मिसर का ख्वाब और हज़रत यूसुफ अल की ताबीर.

उस्के बाद बादशाह ने एक ख्वाब देखा के सात मोटी गायें हे जिन्हें सात दुबली पतली गायें खा रही हे, और अनाज की सात हरी बालियां हे और दूसरी सात सूखी हुई बालियां हे. बादशाह ने दरबारियों से उस्की ताबीर पूछी तो केहने लगे ये तो ऐसे ही परेशान करने वाले ख्वाबों मेसे हे.

जब ये वाकया हुवा तो जेल से छूटने वाले साथी को एक लम्बी मुद्दत के बाद हज़रत यूसुफ (अल) की याद आई, उसने कहा मुज़े जेल खाना भेजिये, मे इस ख्वाब की ताबीर पूछकर आता हु,

उसने हज़रत यूसुफ (अल) को ख्वाब सुना कर ताबीर पूछी तो आपने फरमाया सात बरस तक लगातार तुम खेतीबाडी करते रहोगे, इस दौरान जो फसलें तुम काटो उन्मे से इतना हिस्सा जो तुम्हारे खोराक के काम आये उतना निकाल लो, और बाकी हिस्से को उन बालियों मे ही रहने दो, फिर सात बरस कहत साली (दुकाळ) के आयेंगे उसमे वो अनाज काम आयेंगा, अगर कुछ बचेगा तो सिर्फ वोही जो तुमने मेहफ़ूज़ कर रखा होगा, उस्के बाद एक साल ऐसा आयेंगा जिसमे खूब बारिश होगी.

## हजरत यूसुफ (अल) शाही खज़ाने के सरसराहट मार्गदर्शक प्रमुख.

बादशाह इस ताबीर को सुनकर बहुत मुतासिर हुवा, उसने कहा की यूसुफ को मेरे पास लावो, जो एलची (messenger) उन्के पास गया था उस्से हज़रत यूसुफ (अल) ने फरमाया अपने आका से कहो की पहले उन औरतों का मामला साफ हो जाना चाहिये जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे.

बादशाह ने अदालत लगाई और फिर उन औरतों से पूछताछ हुई, वो सब के सब बोली अल्लाह की पनाह! हमने उसमे ज़र्रा बराबर भी बुराई नही देखी, अज़ीज़े मिसर की बीवी बोली अब हक खुल चुका हे, वाकई वोह सच्चा हे, मेने ही उसे गुमराह करने की

कोशिश की थी. (<पारा १२ खत्म).

(पारा १३ शुरू>) बादशाह ने कहा की अब मामला बिल्कुल साफ हो चुका हे की वो बेगुनाह हे. उन्हें लावो! मे उन्हें अपने लिये खास करना चाहता हु. जब बादशाह से बातचीत हुई तो हज़रत यूसुफ (अल) ने कहा की मुल्क के खज़ाने मेरे सुपुर्द कर दीजिये, मे हिफाज़त करने वाला भी हु और मेरे पास इल्म भी हे. इस तरह अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ (अल) को मिसर की सर ज़मीन मे इख्तियार बखशा और अल्लाह तआला किसी नेक काम करने वाले के आजरो सवाब को जाये (बर्बाद) नही करता.

## हज़रत यूसुफ (अल) के भाई उन्की खिदमत मे.

जब कहत (दुकाळ) पडा तो हज़रत युसूफ (अल) के भाई अनाज लेने के लिये मिसर आये, हज़रत यूसुफ (अल) ने उन्हें पहचान लिया मगर वो उन्हें ना पहचान सके, हज़रत यूसुफ (अल) ने उन्का सामान तैयार करा दिया, (हज़रत युसूफ (अल) ने अनजान बनकर उनसे हाल अहवाल दरियाफत कर लिये) और चलते वक्त उनसे कहा की आइन्दा जब तुम आवो तो अपने सौतेले भाई को भी साथ लेते आना, देखो मे आनाज भी पूरा देता हु और मेहमान नवाज़ हु. अगर तुम लोग उसे ना लाये तो मेरे करीब भी ना पटकना. उन्होने कहा की हम कोशिश करेंगे की वालिद साहब

उसे हमारे साथ भेजने पर राज़ी हो जाये, हज़रत यूसुफ (अल) ने उन्की अदा की हुई रकम भी उन्के सामान मे वापस रखवा दी ताकी वो फिर वापस आये.

जब वो अपने वालिद की खिदमत मे वापस पहुंचे तो उन्होने अपने वालिद से कहा की आइन्दा जब हम अनाज लेने जाये तो हमारे भाई को भी हमारे साथ भेजना, क्योंकि उस्के बगैर हमे अनाज नही मिलेगा, हज़रत याकूब (अल) ने कहा क्या मे इस्के मामले मे भी तुम पर ऐसे ही भरोसा करूं जैसा की इस्के भाई युसूफ के मामले मे तुम पर भरोसा किया था? अल्लाह सब बेहतर हिफाज़त करने वाले हे, और फिर जब उन्होने अपना सामान खोला तो अनाज के अंदर अपनी रकम भी मौजूद पाई, अब तो और जियादा इसरार करने लगे, तो वालिद ने कहा मुज़े पक्का वादा दो के इसे मेरे पास वापस ज़रूर लावोगे, और हज़रत याकूब (अल) ने बच्चों को रुखसत करते वक्त कहा देखो! कहीं तुम हसद का शिकार ना हो जावो, इस्लीये एहतियात के तौर पर तुम सब अलग-अलग दरवाज़ो से शहर मे दाखिल होना, मे अल्लाह के फैसले से तो तुम्हें नही बचा सकता, हुकुम तो उसी का चलेगा.

## दो भाइयों का मिलाप.

जब सब भाई हज़रत यूसुफ (अल) के पास पहुंचे तो उन्होने अपने

भाई को अलग से बुलाकर पूरा वाकया बतला दिया, और कहा की तुम कोई गम ना करो. (जब उन्के जाने का वक्त आया और) हज़रत यूसुफ (अल) अपने भाई (बिनयामीन) का सामान चढाने लगे तो चुपके से अपने अनाज का सोने का बर्तन उन्के सामान मे रखवा दिया, उन्के जाने के बाद अनाज के बर्तन की तलाश हुई तो उन्हें उन्के भाईयों पर शक हुवा, उन लोगों से कहा के बर्तन तुम लोगों ने चुराया हे, उन्होने कहा अगर हम मेसे चोर निकल आये तो तुम चोर को अपने पास रख लेना.

जब तलाशी हुई तो हज़रत यूसुफ (अल) के भाई के सामान मेसे वो बर्तन निकल आया, अल्लाह तआला का इरशाद हे के बिनयामीन को अपने पास रखने की ये तदबीर (चाल) हमने हज़रत यूसुफ (अल) को सिखाई थी. (वरना मिसर के कानून के मुताबिक वो उस्को अपने पास नही रख सकते थे.) इस्पर उन्के भाइयों ने कहा अगर इसने चोरी की हे तो इस्के भाई यूसुफ ने भी इस्से पहले चोरी की थी, ये सुनकर हज़रत यूसुफ (अल) अपने गुस्से को पी गये, बस अपने दिल ही दिल मे इतना कहा तुम बडे ही बुरे लोग हो. फिर उन्होने दरखास्त की के हमारे वालिद बहुत बुढे हे, तो आप ऐसा करे की हम्मे से किसी को इस्की जगह अपने पास रखले, हज़रत यूसुफ (अल) ने कहा हम तो उसीको रखेंगे

जिस्के सामान मेसे अनाज का बर्तन निकला हे.

## हज़रत यूसुफ (अल) के भाइयों को माफी.

अब सब भाई मायूस होकर आपस मे मशवरे करने लगे, (वालिद ने हमसे बिन्यामीन को वापस लाने का पक्का वादा किया था) इस्लीये सबसे बडे भाई ने कहा इस्से पहले तुम यूसुफ के बारे मे कोताही कर चुके हो, अब मे तो वालिद साहब के पास नही जाउंगा, जब तक वो खुद मुज़े इजाज़त नादे, (मिसर की सर ज़मीन छोडकर अपने धर वापस आनेको) या इस्के बारे मे अल्लाह तआला की तरफ (वही के जरिये) से हमारे हक्मे कोई फैसला ना आये. तुम वालिद साहब के पास जावो और जाकर उनसे कहो की आपके बेटे ने चोरी की हे, और बेशक आप मिसर से आने वाले किसी दूसरे काफले वालों से इस्की तस्दीक (अंके) करवा ले, या मिसर वालों मेसे किसी से पूछवा ले.

बेटों ने वापस आकर हज़रत याकूब (अल) को सारा किस्सा सुनाया तो उन्होने कहा अच्छा मे इस्पर भी सबर कर लूंगा, ये तुमने एक और बात धडली हे, (जूठा बहाना बना लिया हे) और वो दिल ही दिल मे गम के मारे धुले जा रहे थे, और बहुत जियादा रोने की वजह से उन्की आंखें सफेद पड गई थी, (बीनाई जाती रही) बेटों ने कहा की आप तो बस यूसुफ को ही याद किया करते हे, और उस्के

गम मे अपने आपको हलाक कर लेंगे, उन्होने फरमाया मेरी शिकायत तो सिर्फ मेरे रब के सामने हे, तुमसे या किसी और से मे अपने रंजो गम का इज़हार नही करता, और अल्लाह की तरफ से जो मे जानता हु, तुम नही जानते हो. (यानी ये की एक वक्त अल्लाह तआला मुज़े युसूफ से ज़रूर मिलायेगा) बेटो! जावो! तुम यूसुफ को तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद मत हो.

जब ये लोग तीसरी मर्तबा हज़रत यूसुफ अल की खिदमत मे मिसर पहुंचे, तो अर्ज करने लगे ए सरदार! हम बहुत थोडी सी पूंजी लेकर आये हे, हमे भरपूर अनाज भी देना और कुछ खैरात भी दे देना. ये सुनकर हज़रत यूसुफ अल से रहा ना गया, उन्होने फरमाया: तुम जानते हो, तुमने यूसुफ के साथ क्या सुलूक किया था? अब भाइयों को होश आया, तो केहने लगे तू यूसुफ हे? फरमाया हां! मे ही यूसुफ हु और ये मेरा भाई हे, अल्लाह ने हमपर एहसान फरमाया हे. भाई बोले वाकई अल्लाह तआला ने तुमको फज़ीलत बख्शी हे. और हकीकत मे हम खताकार हे. हज़रत यूसुफ अल ने फरमाया जावो तुम पर आज कोई डांट फिटकार नही, अल्लाह तुम्हें बख्शदे. और जब तुम वहां जावो तो मेरा कुर्ता ले जावो और उसे वालिद साहब के चेहरे पर डाल देना, उन्की बिनाई लौट आयेगी, जावो! और सब धर वालों को लेकर मेरे पास आ जावो.

## वालिद और भाई हज़रत यूसुफ (अल) की खिदमत मे

जब ये लोग मिसर से चले तो वहां कंआन मे हज़रत याकूब (अल) फरमाने लगे मे यूसुफ की खुशबू मेहसूस करता हु, अगर तुम लोग ये ना कहो की मे पुरानी बेहकी बेहकी बातों मे मुबतला हु, (यानी ये के यूसुफ ज़िन्दा हे और वोह फिर मिलेंगे) इतने मे क्या देखते हे की मिसर से एक खुशखबरी लाने वाला आया और उसने हज़रत यूसुफ (अल) का कुर्ता उन्के मुंह पर डाल दिया, तो फौरन उन्की बीनाई लौट आई, फरमाने लगे मे ना कहता था की मे अल्लाह तआला की तरफ से वो कुछ जानता हु जो तुम नही जानते.

उस्पर सब लोग हज़रत याकूब (अल) से माफी मांगने लगे, हज़रत याकूब (अल) फरमाने लगे मे अपने रब से तुम्हारे लिये माफी की दरखास्त पेश करूंगा, (उन्के लिये फौरन माफी इस्लीये नही मांगी की हज़रत यूसुफ (अल) से पहले तेहकीक कर ले की उन्होने इन्को माफ कर दिया या नही, जब हज़रत यूसुफ (अल) ने उन्को माफ कर दिया, फिर अल्लाह के हुजूर उन्की माफी की दरखास्त पैश की) अब वोह (अल्लाह तआला) बहुत माफ करने वाला हे.
जब ये लोग वहां से हज़रत यूसुफ (अल) के पास पहुंचे तो उन्होने अपने वालिद को अपने पास तख्त पर बैठा लिया, और तमाम भाई बे-इख्तियार उन्के सामने ज़ुक गये, हज़रत यूसुफ (अल) ने

कहा अब्बा जान! ये मेरे (उस बचपन के) ख्वाब की ताबीर हे, उसका एहसान हे की उसने मुज़े जैल खाने से निकाला और आपको कंआन से लाकर मुज़से मिला दिया, हालांकि शैतान मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फसाद डाल चुका था, (यानी मेरे भाई तो ऐसे ना थे, शैतान ने धोका देकर उन्के दिलों मे मेरी नफरत डाल दी थी, और उन्होने पहले ही भाईयों माफ कर दिया था, जेल खाने का तो जिकर किया, लेकिन कुवें वाले वाक्ये का जिकर इस्लीये नही किया, ताकी भाई शर्मिन्दा ना हो) लेकिन मेरा रब बडा मेहरबान हे.

फिर दुवा की, ए मेरे रब! तूने मुज़े हुकूमत बख्शी, और मुज़ को ख्वाबों की ताबीर का इल्म दिया, ज़मीन और आसमान का बनाने वाला! तू ही दुनिया और आखिरत मे मेरा सरपरस्त हे, मेरा खात्मा ईमान पर हो और मुज़े नेक लोगों के साथ मिलादे.

अल्लाह तआला का इरशाद हे ये सब गैब की खबरें हे जो हमने आपकी तरफ वही की हे, आपकी नबुव्वत का इन्कार करने वाले अगर आपकी बात ना माने तो आपको क्या गम! आप उन लोगों से कोई मज़दूरी तो नही मांग रहे हे, कुरान दुनिया वालों के लिये नसीहत की किताब हे.

## हज़रत यूसुफ (अल) की ज़िन्दगी एक इबरत (नसीहत) का सबक हे.

• ज़मीन और आसमान मे कितनी ही निशानियां हे जिन्पर से ये लोग गुज़रते हे, मगर जरा भी ध्यान नही देते, ये अल्लाह को मानते हुवे उस्के साथ दूसरों को भी शरीक ठहराते हे, कया उन्हें ये ख्याल नही आता की उन्हें बेखबरी मे हमारा अज़ाब आ-पकडेगा. आप उनसे साफ-साफ कह दे मेरा यही रास्ता हे, मे पूरी सूज़ बूज़ और यकीन के साथ अल्लाह की तरफ बुलाता हु, और मे मुशरिक नही हु. (मे अपनी इबादत की दावत नही देता, बल्कि मे भी अल्लाह का बन्दा हु और लोगों को भी अल्लाह की बन्दगी की तरफ बुलाता हु, लेकिन नबी होने की वजह से मुज़ पर ईमान लाना फर्ज हे) जितने पैगंबर भेजे गये सब इन्सान थे, ये हकका इन्कार करने वाले जब ज़मीन मे चलते फिरते हे तो क्या उन्हें पेहली कोमों का अन्जाम नज़र नही आता, और येके आखिरत का अच्छा अंजाम परहेज़गारों के लिये हे.

• नबियों पर एक वक्त ऐसा भी आया की वो काफिरों के ईमान लाने से मायूस हो गये, (जब तक उन काफिरों के लिये मोहलत थी उस वक्त तक मोहलत दे दी गई, जब उन्की मोहलत का वक्त खत्म हो गया तो काफिरों को अल्लाह के अज़ाब ने पकड लिया

और ईमान वालों को बचा लिया गया) तो इस तरह उनतक हमारी मदद आ पहुंची, और याद रखो! मुजरिमों से हमारा अज़ाब नही टलता, कुरान नसीहत की किताब हे, इसमे (जो किससे बयान किये जाते हे) बनावटी बातें नही हे, कुरान मजीद पेहली किताबों की तस्दीक करने वाला हे, और ईमान वालों के लिये हिदायत और रहमत हे.